पिउ हार्‍या हार्‍या कहे स्वरमां, हांसी हरखे रे उपजावे।
हूं जीती जीती कहे घोघरे, साथ सहुने हंसावे।। ६ ।।

सब साथ एक स्वर में 'पिया जी हार गए, पिया जी हार गए' कहकर बड़े उमंग से हंसती हैं। 'मैं जीती, मैं जीती' जोर के स्वर में कहकर सब सुन्दरसाथ को हंसाती हैं।

ए रे घूमडले हांसी रे साथने, रहे नहीं केमे झाली।
लडथडे पडे भोम आलोटे, हंसी हंसी पेट आवे रे खाली।। ७ ।।

इस घूमडले की हंसी सुन्दरसाथ से रोके नहीं रुकी। हंसी-हंसी में इतनी हंसीं कि धरती पर गिरकर लोट-पोट होने लगीं तथा उनके पेट में बल पड़ने लगे।

ए रामतडी जोई कहे सखियो, इंद्रावती ए राखी रेख।
साथ सहुने वाली घणूं लागी, मारा वालाजीने वली वसेख।। ८ ।।

इस रामत को देखकर सब सखियां कहती हैं कि श्री इन्द्रावतीजी ने हमारी लाज रख ली। सब सुन्दरसाथ को श्री इन्द्रावतीजी प्यारी लगीं और वालाजी को और भी अच्छी लगीं।

|| प्रकरण || २३ || चौपाई || ५४१ ||

राग वसंत

कोणियां रमिए रे मारा वाला, गाइए वचन सनेह।
मनसा वाचा करी करमना, सीखो तमने सीखवुं एह।। १ ।।

हे वालाजी! आओ, कोनियां की रामत खेलें। प्यार के वचन गाएं। मन से, वचन से और कर्म से सीखो। मैं आपको रामत सिखाती हूं।

ए रामतडी जोरावर रे, दीजे ठेक अंग वाली।
रमतां सोभा अनेक धरिए, गाइए वचन कर चाली।। २ ।।

यह खेल बड़ा जोरदार है। अंग को मोड़कर कूदना है। रामत खेलने में बड़ी शोभा होगी। हम चाल के अनुसार वचन गाएंगे।

करे रमिए कोणियां रमिए, चरण रामतडी कीजे।
वली रामतमां विलास विलसी, प्रेम तणां सुख लीजे।। ३ ।।

हाथ से खेलिए, कोहनियों से खेलिए, चरण से खेलिए, फिर खेल में अपार आनन्द का सुख लीजिए।

जुओ रे सखियो वालो कोणियां रमतां, भांत भांत अंग वाले।
सखियो रामत बीजी करी नव सके, उभली जोड निहाले।। ४ ।।

हे सखियो! देखो वालाजी कोहनियों की रामत खेलते हैं और तरह-तरह से अंग मोड़ते हैं कोई और सखी ऐसी रामत नहीं कर सकती। सब खड़ी-खड़ी इस जोड़ी को देख रही हैं।

कर मेलीने कोणियां रमिए, कोणी मेलीने करे।
अंगडा वाले नेंणा चाले, मनडां सकलनां हरे।। ५ ।।

हाथ की रामत छोड़कर कोहनियों की रामत करें। फिर कोहनियों की रामत छोड़कर हाथ की रामत करें। अंगों को मोड़ें। आंखों को घुमाकर सबके मन को मोहित करें।

Nijanand App

ए रामतना रस कहूं केटला, थाय निरतना रंग।
हस्त चरणनां भूखण सर्वे, बोले बंनेना एक बंग।। ६ ।।

इस रामत का आनन्द कितना कहूं? इसमें हाथ के, पैर के, सभी आभूषण एक साथ ऐसे बोलते हैं, जैसे नृत्य हो रहा हो।

लटके गाए ने लटके नाचे, लटके मोडे अंग।
लटके रामत रेहेस लटके, लटके सांईं लिए संग।। ७ ।।

लटक के साथ में गाएंगे। लटकते हुए नाचेंगे। लचकाते हुए अंग को मोड़ेंगे। इस खेल के भाव को लटक से ही दिखाएंगे तथा लटक से ही वालाजी के साथ खेलेंगे।

मारा वालाजीमां एक गुण दीसे, जाणे रामत सीख्या सहु पेहेली।
इंद्रावतीमां बे गुण दीसे, एक चतुर ने रमता गेहेली।। ८ ।।

वालाजी में एक गुण दिखाई देता है कि वह पहली बार में ही सीखकर रामत खेल लेते हैं। श्री इन्द्रावतीजी में दो गुण दिखाई देते हैं—एक तो वह चतुर हैं, दूसरी वह मदभरी मस्ती में खेलती हैं।

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ५४९ ।।

राग कालेरो

आवो वाला रामत रासनी कीजे, आपण कंठडे बांहोंडी कां न लीजे रे।। टेक ।। १ ।।

हे वालाजी! आओ, हम रास की रामत खेलें अपन एक-दूसरे के गले में बाहें क्यों न डालकर खेलें?

आ वेख केम करी ल्याव्या रे वालैया, अमने थयो अति मोह रे।
खिण एक अमथी अलगां म थाजो, अमे नहीं खमाय विछोह रे।। २ ।।

हे वालाजी! आपने ऐसा मनमोहक भेष कैसे धारण किया? हम देखकर मोहित हो रहे हैं, इसलिए अब आप एक पल के लिए भी जुदा नहीं होना, वरना हम से वियोग सहन नहीं होगा।

आ वेख अमने वालो घणु लागे, वेख रसाल अति रंग।
द्रष्ट थकी अलगां म थाजो, दीठडे ठरे सर्वा अंग।। ३ ।।

आपका यह भेष हमें बड़ा प्यारा लगता है। भेष रस भरा है। इसे देखकर सब अंग तृप्त होते हैं। इसलिए आप हमारी आंखों से ओझल नहीं होना।

आ वेख अमने गमे रे वालैया, लीधो कोई मोहन वेल रे।
नेंणे पल न आवे रे वालैया, रूप दीसे रंग रेल रे।। ४ ।।

हे वालाजी! आपने एक मोहिनी बेल की तरह जो भेष धारण किया है, वह हमें बड़ा अच्छा लग रहा है। इसे देखकर हमसे पलक भी नहीं झपकी जाती। आपका रूप आनन्द से भरपूर दीखता है।

रामत करतां रंग सहु कीजे, खिण खिण आलिंघण लीजे रे।
अधुर तणो जो रस तमे पीओ, तो अमारा मन रीझे रे।। ५ ।।

खेलने में सब प्रकार के आनन्द के साथ पल-पल में लिपटते रहें। हमारे अधरों का रस आप पिएं तो हमारा मन आप पर रीझ जाए।

Nijanand App